कोई को भक्तिदायक बना नहीं सकते है, जो जरूर बन्दर बुधी है। पूरे ऐसे है। यह है ही बन्दरों की दुनियाँ। मनुष्य तो है लड़ाई भी है नाँ। इनकी भेंट में सब बन्दरमिसल है। देखना चाहिये हमारे में कौन सा अवगुण है? तुम इन बैजिज पर तो बहुत सर्विस कर सकते हो। यह फर्स्ट क्लास चीज है। भले पाई पैसे की चीज है परन्तु इससे कितना ऊंच पदपा सकते है। मनुष्य पढने लिये किताबों आद पर कितना खर्चा आद करते है। यहाँ किताबों आद की तो बात ही नही। सिर्फ सभी के कानों में संदेश देना है। यह है बाप का सच्चा-2 मन्त्र। बाकी तो सब झूठे मन्त्र देते रहते है। झूठी चीज की वैल्यु थोड़ेई होती है। वैल्यु हीरों की होती है नाँ कि पत्थरों की। इस समय मार्ग में मनुष्यों के पास सभी है पत्थर ही पत्थर। वेद शास्त्रों आद को कोई ज्ञान रत्न नही कहेंगे। यह तो लोक कहते है कि एक-2 वर्शन्स लाखों की मिलकयत है वो इसी ज्ञान कि के लिये कहा जाता है। बाप कहते है शास्त्र तो ढेरके ढेर है। तुम आधा कल्प पढते आये हो इनसे तो कुछ भी नही मिला है। अभी हम तुमको ज्ञान रत्न देते है। वो है शास्त्रों की आथारटी। बाप तो ज्ञान का सागर है। उनके एक एक वर्शन्स लाखों करोड़ों रुपयों के है। तुम विश्व के मालिक बनते हो। पद्मपति स्वर बनते हो। इस ज्ञान की ही महिमा है। वो शास्त्र आद पढते तो कंगाल बन गये हो। तो अभी इन ज्ञान रत्नों का दान भी करना है। बाप बहुत सहज युक्तियाँ बताते है। कोई अपने धर्म को

भूल कर तुम बाहर भटकते रहते हो। तुम भारतवासी तो आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे। वो धर्म कहाँ गया? 84लाख योनियां कहने से कोई भी बात बुधी में बैठती नही है। अभी बाप समझाते है तुम आदी सनातन देवी देवताधर्म के थे। फिर 84जन्म लिये है। यह ल न. आदी सनातन देवी देवता धर्म वा है नाँ। अभीधर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन गये है। और सभी धर्म खड़े है। यही धर्म आदी सनातन है नही। जब यह धर्म था तो और धर्म नही थे। कितना सहज है। यह बाप यह दादा। प्रजापिता ब्रह्मा है तो जरूर ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ ढेर के ढेर होंगे नाँ। है सभी ब्राह्मण कुल के। परन्तु वो गुण नहीं होने कारण जैसे कि

बन्दर कुल की दिखाई पड़ते है। सभी बन्दर है नां। बाप आकर रावण की जेल से शोक वाटिका से छुड़ाते है। बाप कहते है यह शोक की दुःख की दुनिया है। वो है सुख की दुनियाँ। अपनी शान्तीकी दुनिया और सुख की दुनिया को याद करते रहो। इन्करपोरियल वर्ल्ड कहते है नाँ। अंग्रेजी अक्षर बहुत अच्छे है। अंग्रेजी तो चली ही आती है। अभी तो अनेक भाषायें भाषायें हो गई है। मनुष्य तो ऐसे मुर्ख है जो कुछ भी समझते नही है। अभी कहते है निर्गुण बालक संस्था। निर्गुण अर्थात कोई गुण नाही। ऐसे है संस्था। निर्गुण का भी अर्थ नही समझते। बन्दर बुधी है नां। बिगर अर्थ नाम रख देते। अथाह संस्थाये है। भारत में एक ही आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना थी। और कोई धर्म नही था। परन्तु ऐसा बुधियों ने कल्प की आयु 5000 वर्ष के बदले लाखों वर्ष लगा दी है। भल ड्रामा बना बनाया है। परन्तु फिर भी सावधानी तो देंगे नाँ। कोई तो बन्दर बुधी से देवता बुधी होते जाते है। कोई तो बन्दर बुधी से पलटते ही नही। कोई लज्जा नही। शर्म, भर्म नही। जो ऊंच ते ऊंच कर्म करना चाहिये वो नही करते। पिछाड़ी वो क्या पद पावेंगे। बाप तो ऐसे कहेंगे नाँ। शिव बाबा के यज्ञ से खावेंगे पीवेंगे सर्विस कुछ भी नही करेंगे तो धर्म राज जो राईट हैंड है वो जरूर हड्डी तोडेंगे। जेल बर्ड्स को सजा का डर नही रहता। सर्विस करना है बहुत सहज। प्रेम से कोई को भी समझाते रहो। बाबा के पास कोई-2 का समाचार आता है कि हम मन्दिर में गये, गंगा घाट पर गये, मनुष्य सवेरे उठ कर मन्दिर में जाते है। रिलीजस माईंडेड को समझाना सहज होगा। सबसे अच्छा है ल न. के मन्दिर में सर्विस करना। अच्छा फिर इनको ऐसा बनाने वाला शिव बाबाफिर कहाँ जाकर समझाओ। इन बन्दरों का तो विनाश हो जाना है। जंगल को आग लग जावेगी। यह रेस आद सब खत्म हो जावेंगे। फिर तुम्हारा भी पार्ट पूरा होता है। तुम जाकर राजाई कुल में जन्म लेते हो। राजाई कैसे चलनी है। सो आगे चल कर पता पड़ेगा। ड्रामा में पहले से थोड़ेई सुनाया जावेगा। तुम जान लेंगे हम क्या

पद पावेंगी। जास्ती दान पुण्य करने वाले राजाई में जाते है नां। राजाओं के पास धन बहुत रहता है। अब तुम यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते हो। इन बातों को कदर बुद्धी समझ नही सकते। यह है ही तमो प्रधान दुनियां। भारतवासियों के लिये ही यह ज्ञान है। पहले अपने धर्म वालों के साथ तो तोड़ निभाओ दोनों आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। पतित से पावन बनाने वाला बाप आया है। कहते है मुझे याद करो। कितना सहज है। परन्तु इतने सैम्प बुधी है जो कुछ भी धारना नही होती है। विकारों की प्रवेशता है। जनावर भी किस्म-2 के होते है कोई में क्रोध जास्ती होता है, हर एक जनावर का स्वभाव अलग-2 होता है। किस्म-2 कि स्वभाव होते है दुख देने के। सबसे पहला दुःख देने का विकार है काम कटारी चलाना। रावण राज्य में है ही इन पांच विकारों का राज्य। बाप तो रोज समझाते रहते है। जो अच्छी-2 बच्चियां है वो फिर कैद में है। जिनको बान्धेलियां कहते है। वास्तव में उनको अगर ज्ञान की पराकाष्ठा हो जावे तो कोई भी बन्दर उनको पकड़ नही सकता है। परन्तु मोह की रग बहुत है। सन्यासियों को भी घर बार याद आता है। बहुत मुश्किल से तड़फना छूटता है। अब तुमको तो मित्र सम्बन्धी आद सबको भूलना ही है। क्यूंकि यह पुरानी दुनिया ही खत्म होने वाली है। इस शरीर को भी भूल जाना है। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है। पवित्र बनना है। 84 जन्मों का पार्ट तो बजाना ही है बीच में ही तो कोई वापस जा नही सकते है। अभी नाटक पूरा होता है। तुम बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिये। अब हमको जाना है अपने घर। पार्ट पूरा हुआ। उतावली होनी चाहिये। बाबा को बहुत याद करना चाहिये। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। घर जाकर फिर सुख धाम में आवेंगे। कई समझते है जल्दी इस दुनिया से छूटे। परन्तु जावेंगे कहां? पहले तो ऊंच पद पाने मेहनत भी करनी चाहिये नां। पहले अपनी नब्ज देखनी है हम कहां तक लायक बने है। स्वर्ग में जाकर क्या करेंगे। पहले तो लायक बनना पड़े नां। बाप के सपूत बच्चा बनना पड़े। यह (लन्न.) सपूत लायक है नां। बाकी है सब नालायक। भगवान भी कहते है यह बड़े अच्छे है लायक है सर्विस करने के। कोई को तो कहेंगे यह नालायक है अपने पद भ्रष्ट कर देते है। बाप तो सच कहते है नां। पुकारते है हे पतित पावन आओ। आकर सुख धाम का मालिक बनाओ। सुख घनेरे मांगते है नां। तो बाप कहते है कुछ तो सर्विस करने लायक बनो। बाप ने समझाया है जो भी भक्त है उनको बताओ। शिव बाबा तो अभी वर्सा दे रहे है। कहते है मुझे याद करो। पवित्र बनो। तो पवित्र दुनिया के मालिक बन जावेंगे। इस पुरानी दुनिया को आग लग रही है। सामने ऐम आब्जेक्ट देखने से बहुत खुशी रहती है। हमको यह बनना है। यह सदैव बुधी में याद करना चाहिये कब भी कोई शैतानी काम ना हो। हम यह बन रहे है फिर ऐसे काम कैसे कर सकते है। परन्तु किसीकी तकदीर में नही है तो ऐसी युक्तियां भी नही रचते है। अपनी कमाई नही करते। कमाई कितनी अच्छी है। घर बैठे अपनी कमाई करनी है और फिर औरों को करानी है। घर बैठे ही यह स्वदर्शन चक्र फिराना है। औरों को भी स्वदर्शनचक्र धारी बनाना है। जितना बहुतों को बनावेंगे उतना तुम्हारा मर्तबा ऊंच होगा। इन लन्न. के चित्र को देखने से तुम्हारा क्रोध भी उड़ जावेगा। अगर क्रोध आद हमारे में है तो हम इन लन्न. जैसे बन नही सकते। ऐम आब्जेक्ट ही यही है। काम भी सब सुविधेशी करने में ही उठोत है। नलनी वाला चित्र प्रदर्शनी में बहुत काम आ सकता है।

** **********

इन पर समझाना है भगवानोवाच्य भक्तिमार्ग की कोई भी बातें मत सुनो। हमको ऊंच ते ऊंच बाप जो सुनाते है वो ही सुनते है। भक्ति मार्ग की बातें सुननी हम सहन नही कर सकते। वो सब मनुष्यों की बाते है। यह नलनी वाले चित्र बहुत अच्छे है। बाबा समझते है यह चित्र प्रदर्शनी में किसीको देते नही है। लेकिन सबसे अच्छी चीज है। सर्वव्यापी की बात कब कानों से नही सुनो। बाप की निन्दा करते-2 भारत की क्या हालत हुई है। बहुत युक्ति से ज्ञान का तीर मारना है। अच्छा मीठे-2 सिकिलधे कुल वफादार फरमानबरदार, शिव बाबा फरमान करते है हे बच्चे मामेकम् याद करो। याद नही करते है तो गोया वफादार फरमानबरदार नही ठहरे। ओम